Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

मई,जून/2021ई०

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

May,June-2021

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆9876332272 | Manager: Maqsood Ahmad Bhatti ✆8427263701
Annual Subscription: Rs-210/- | Per Issue: Rs-20/- | Weight: 50-100 gms/Issue

तिथि 16 जनवरी 2021 ई. को मज्लिस अंसारुल्लाह खुर्दा, नयागढ़, कटक (ओडिशा) द्वारा आयोजित रिफ्रेशर कोर्स के अवसर पर स्टेज का दृश्य।

तिथि 16 जनवरी 2021 ई. को मज्लिस अंसारुल्लाह खुर्दा, नयागढ़, कटक (ओडिशा) द्वारा आयोजित रिफ्रेशर कोर्स के अवसर पर उपस्थित अतिथिगण का दृश्य।

मज्लिस अंसारुल्लाह बैंगलोर (कर्नाटक) द्वारा आयोजित तर्बियती इज्लास के अवसर पर उपस्थित अतिथिगण का दृश्य।

मज्लिस अंसारुल्लाह बैंगलोर (कर्नाटक) द्वारा आयोजित तर्बियती इज्लास के अवसर पर स्टेज का दृश्य।

तिथि 20,21 मार्च 2021 ई. को मज्लिस अंसारुल्लाह पलक्काड त्रिशूर (केरल) द्वारा आयोजित पिकनिक पर प्रस्थान से पूर्व का दृश्य।

तिथि 31 जनवरी 2021 ई. को मज्लिस अंसारुल्लाह केरँग (ओडिशा) द्वारा आयोजित रिफ्रेशर कोर्स के अवसर पर अतिथिगण का दृश्य।

कलकत्ता में आयोजित एक सर्वधर्म सम्मलेन में जमाअत अहमदिया की ओर से जमाअती लिट्रेचर प्रस्तुत करते हुए।

तिथि 19 मार्च 2021 ई. को मज्लिस अंसारुल्लाह कादियान (मोहल्ला मसरूर) द्वारा आयोजित पिकनिक के अवसर का दृश्य।

तिथि 16 जनवरी 2021 ई. को मज्लिस अंसारुल्लाह खुर्दा, नयागढ़, कटक (ओडिशा) द्वारा आयोजित रिफ्रेशर कोर्स के अवसर पर नि:शुल्क मैडिकल कैंप का दृश्य।

तिथि 16 जनवरी 2021 ई. को मज्लिस अंसारुल्लाह खुर्दा, नयागढ़, कटक (ओडिशा) द्वारा आयोजित रिफ्रेशर कोर्स के अवसर पर ओडिया भाषा की एक नई पुस्तक के लोकार्पण का दृश्य।

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم نحمدہٗ ونصلی علٰی رسولہ الکریم وعلٰی عبدہ المسیح الموعود

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ
سورۃ الصف آیت ۱۵

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
मक्सूद अहमद भट्टी
Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग
आसमा तय्यबा

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 19 मई-जून 2021 Issue - 5-6

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय -कोरोना वायरस की दूसरी लहर और सावधानी की आवश्यकता	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन ख़िलाफत के निज़ान की सुरक्षा, अनुपमीय आज्ञापालन।	6
ख़िलाफत ख़ामसा की बरकतों वाला युग और उस के फल	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

وَعَدَاللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَ لَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ (सूर: अन्नूर आयत 56)

अनुवाद - तुमें से जो लोग ईन लाए और पुण्य कर्म किए उनसे अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि उन्हें अवश्य धरती में ख़लीफा बनाएगा। जैसा कि उसने उनसे पहले लोगों को ख़लीफा बनाया। और उनके लिए उनके धर्म को जो उसने उनके लिए पसंद किया, अवश्य दृढ़ता प्रदान करेगा। और उनकी भयपूर्ण अवस्था के बाद अवश्य उन्हें शांतिपूर्ण अवस्था में परिवर्तित कर देगा। वे मेरी उपासना करेंगे, मेरे साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराएँगे । और जो उसके बाद भी कृतघ्नता करे तो यही वे लोग हैं जो अवज्ञाकारी हैं ।

दर्सुल हदीस

عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: تَكُوْنُ النُّبُوَّةُ فِيْكُمْ مَا شَآءَ اللهُ اَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللهُ تَعَالٰى ثُمَّ تَكُوْنُ خِلَافَةٌ عَلٰى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ مَا شَآءَ اللهُ اَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللهُ تَعَالٰى ثُمَّ تَكُوْنُ مُلْكًا عَاضًّا فَتَكُوْنُ مَا شَآءَ اللهُ اَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللهُ تَعَالٰى ثُمَّ تَكُوْنُ مُلْكًا جَبْرِيَّةً فَيَكُوْنُ مَا شَآءَ اللهُ اَنْ يَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللهُ تَعَالٰى ثُمَّ تَكُوْنُ خِلَافَةٌ عَلٰى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ ثُمَّ سَكَتَ۔

(मुस्नद अहमद, पृष्ठ 4/223- मिशकातुल किताबुर्रिक़ाक़, बाब अंज़ार वत्तहज़ीर)

अनुवाद - हज़रत हुज़ैफ़: रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- तुम में नबुव्वत क़ायम रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा फिर वह उसको उठा लेगा और ख़िलाफ़त अला मिन्हाजुन्नबुव्व: क़ायम होगी। फिर अल्लाह तआला जब चाहेगा उस अनुकम्पा को भी उठा लेगा। फिर उसके विधान के अनुसार दुविधा जनक राज्य स्थापित होगा (जिससे लोग तंगी अनुभव करेंगे) जब यह दौर समाप्त होगा तो उसके दूसरे विधान के अनुसार उससे बढ़कर भ्रष्ट राज्य स्थापित होगा यहाँ तक कि अल्लाह तआला की दया को जोश आएगा और अत्याचार एवं अशांति के दौर को समाप्त कर देगा। उसके बाद फिर ख़िलाफ़त अला मिहाजुन्नबुव्व: स्थापित होगी। यह फ़रमा कर आप ख़ामोश हो गए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

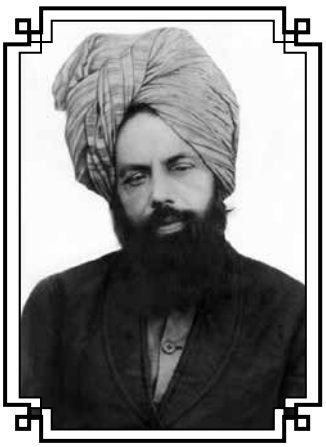

"यह ख़ुदा तआला की सुन्नत है तथा जब से कि उसने इंसान को धरती पर जन्म दिया है सदैव इस सुन्नत को प्रकट करता रहा है कि वह अपने नबियों तथा रसूलों की सहायता करता है और उनको ग़ल्ब: देता है, जैसा कि वह फ़रमाता है كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَ رُسُلِیْ (अलमुजादिला : 23)और ग़लब: से अभिप्राय: यह है जैसा कि नबियों तथा रसूलों का यह अभिप्राय: होता है कि ख़ुदा की हुज्जत धरती पर पूरी हो जाए तथा उसका कोई मुक़ाबला न कर सके इसी प्रकार ख़ुदा तआला प्रभाव पूर्ण निशानों के साथ उनकी सच्चाई प्रकट कर देता है तथा जिस सत्य मार्ग को वे दुनिया में फैलाना चाहते हैं उसका बीजारोपण उन्हीं के हाथ से कर देता है किन्तु उसका सम्पूर्ण रूप उनके हाथ से नहीं करता अपितु ऐसे समय पर उनको मौत देकर जो प्रत्यक्षत: एक असफलता का भय अपने साथ रखता है, विरोधियों को हंसी और ठट्ठे, आरोप प्रतरोप का अवसर देता है तथा जब वे हंसी ठट्ठा कर चुकते हैं तो फिर एक दूसरा हाथ अपनी क़ुदरत का दिखाता है और ऐसे साधन पैदा कर देता है जिनके द्वारा वे उद्देश्य जो कुछ अपूर्ण रह गए थे अपनी सम्पूर्ण स्थिति को पहुंचते हैं, अर्थात दो प्रकार की क़ुदरतों को प्रकट करता है। 1- प्रथम स्वयं नबियों के हाथ से अपनी क़ुदरत का हाथ दिखाता है। 2- द्वित्तीय ऐसे समय पर जब नबी के निधन के बाद कठिनाईयों का सामना पैदा हो जाता है तथा दुश्मनों का प्रभाव बढ़ जाता है तथा समझते हैं कि अब काम बिगड़ गया तथा विश्वास कर लेते हैं कि अब यह जमाअत नष्ट हो जाएगी और स्वयं जमाअत के लोग भी असमंजस में पड़ जाते हैं तथा उनकी कमरें टूट जाती हैं और कई भाग्य हीन लोग वापस पलटने का मार्ग धारण कर लेते हैं, तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी शक्ति शाली क़ुदरत प्रकट करता है तथा गिरती हुई जमाअत को संभाल लेता है। इस प्रकार वह जो अन्त समय तक धैर्य रखता है, ख़ुदा तआला के इस चमत्कार को देखता है .....सो हे अज़ीज़ो! जब कि आदि काल से अल्लाह की सुन्नत यही है कि ख़ुदा तआला दो क़ुदरतें दिखलाता है ता विरोधियों की दो झूठी ख़ुशयों का सर्वनाश करके दिखलावे, सो अब सम्भव नहीं कि ख़ुदा तआला अपने चिरकालीन विधान को छोड़ देवे। इस लिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास बयान की दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएँ क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना आवश्यक है और उसका आना तुम्हारे लिए अच्छा है क्योंकि वह दायमी है जिसका निरन्तर क्रम प्रलय तक नहीं टूटेगा। और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ। किन्तु मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदैव तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का ब्राहीन-ए-अहमदिया में वादा है और वह वादा मेरी ज़ात के विषय में नहीं है अपितु तुम्हारे लिए वादा है जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरे अनुयायी हैं प्रलय तक दूसरों पर ग़ल्ब: दूँगा। सो अवश्य है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आवे ता बाद इसके कि वह दिन आवे जो पुराने वादे का दिन है, वह हमारा ख़ुदा वादों का सच्चा और वफ़ादार और सच्चा ख़ुदा है। वह सब कुछ तुम्हें दिखाएगा जिसका उसने वादा फ़रमाया, यद्यपि ये दिन दुनिया के अन्तिम दिन हैं और अनेक कठिनाईयाँ हैं जिनके अवतरण का समय है परन्तु अवश्य है कि यह दुनिया स्थापित रहे जब तक वे सारी बातें पूरी न हो जाएँ जिनकी ख़ुदा ने सूचना दी। मैं ख़ुदा की ओर से एक क़ुदरत के रंग में प्रकट हुआ और मैं ख़ुदा की एक स्पष्ट क़ुदरत हूँ और मेरे बाद कुछ अन्य अस्तित्व होंगे जो दूसरी क़ुदरत के द्योतक होंगे।" (मल्फ़ूज़ात भाग 2, पृष्ठ 561 से 564 तक, संस्करण 2003 क़ादियान)

सम्पादकीय

कोरोना वायरस की दूसरी लहर और सावधानी की आवश्यकता

कोरोना वायरस (Covid-19) की दूसरी लहर की लपेट में दुनिया आ चुकी है। आज की ताज़ा रिपोर्ट के अनुसार इस विश्वव्यापी महामारी से पूरी दुनिया में अब तक 31,29,536 लोगों की मौत हो चुकी है। सबसे अधिक मौतें वाले पाँच देशों के निम्नलिखित है

संख्या	देश	नए केस	प्रभावित	मृत्यु
1	अमरीका	37736	3,28,24,389	5,86,152
2	ब्राज़ील	32,572	1,43,40,780	3,90,925
3	भारत	3,52,991	1,73,13,163	1,95,123
4	यू.के	2,064	44,06,946	1,27,434
5	8,440	8,440	39,71,114	1,19,539

(दैनिक साक्षी तेलूगू अख़बार 27-4-2021ई पृष्ठ 6)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"मैं देखता हूँ कि बावजूद मुसीबतों पर मुसीबतों के आने के और हर तरफ़ ख़तरा ही ख़तरा दिखाई देने के लोग अभी तक दिल की कठोरता और गर्व तथा अहंकार से काम ले रहे हैं। अज्ञान कब तक इस बेफ़िकरी में ज़िन्दगी व्यतीत करेंगे। उस समय तक कि लोग ज़िद नहीं छोड़ते। अपनी बरी करतूतों से रुकते नहीं और ख़ुदा तआला से मुसालहत नहीं करते,ये बलाऐं और मुसीबतें दूर नहीं होने की। मैंने देखा है और ख़ूब ग़ौर किया है कि अकाल के दिनों में लोगों ने ज़रा भी अक़ाल की मुसीबत को महसूस नहीं किया। शराब-ख़ाने उसी तरह आबाद थे और बुरे कामों और बदमाशियों के बाज़ार बराबर गर्म थे। आरम्भ में जब कभी कोई नाम मात्र का फ़तवा मक्का मदीना के नाम से आ जाया करता था। तो लोग डर जाया करते थे और मस्जिदें आबाद हो जातीं थीं,परन्तु इस वक़्त गर्व और सीमा से बात से बढ़ चली है। अल्लाह तआला ही फ़ज़ल करे। बुद्धिमान वह है जो अज़ाब आने से पहले उस की चिन्ता करता है और दूर-अँदेश वह है जो मुसीबत से पहले उस से बचने की कोशिश करता है।" (मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ157)

इन ख़ौफ़नाक हालात में हुकूमत की तरफ़ से दी जाने वाली हिदायतों पर अनुकरण करना देश के समस्त नागरिकों के लिए अनिवार्य है। सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"दूसरी प्रमुख बात यह भी मैं कहना चाहता हूँ कि दुनिया में कोरोना की जो महामारी फैली हुई है इस में अहमदी भी सावधानी का जो हक़ है वह नहीं अदा कर रहे। न यूके में न अमरीका में न पाकिस्तान में न किसी अन्य देश में। पूरी तरह सावधानी करनी चाहिए। मास्क इत्यादि पहनना चाहिए। मास्क पहना होता है तो नाक नंगा होता है हालाँकि नाक ढका होना चाहिए। या गर्दन के ऊपर मास्क रखा होता है तो

इस मास्क के पहनने का लाभ क्या? फिर आपस में क़रीब हो के मिलना, सोशल डिस्टेंसिंग social distancing) नहीं रखते और जो नियम गर्वनमैंट ने निर्धारित किए हुए हैं हुकूमत ने बातें बताई हुई हैं उन पर अनुकरण नहीं करते। तो इन सारी बातों पर हमें अनुकरण करना चाहिए। नहीं तो यह महामारी इसी तरह फिर एक दूसरे से फैलती चली जाएगी। और यह भी कोशिश करनी चाहिए कि आजकल कम से कम सफ़र करें। बिना किसी कारण ग़ैर ज़रूरी सफ़र को avoid करें। यूरोप से पाकिस्तान जाने वाले भी सावधानियां करें, आजकल न ही जाएं तो ज़्यादा बेहतर है। बहरहाल अल्लाह तआला इस महामारी को शीघ्र दूर करे और जो अहमदी बीमार हैं उनको भी और जो अहमदी नहीं हैं दूसरे लोग भी जो बीमार हैं उनको भी सेहत प्रदान फ़रमाए।"

(ख़ुत्बा जुमा 12 फरवरी 2021 ई)

सारे संसार में में नए पीड़ितों से स्पष्ट हो रहा है कि सफ़र और मास्क का उचित प्रयोग न करने इसी तरह सरकारी पाबंदियों पर सम्पूर्ण रूप से अनुकरण न करने के परिणाम स्वरूप ही पीड़ितों की संख्या में वद्धि हो रही है। प्यारे आक़ा की इन नई हिदायतों पर हमें अनुकरण करते हुए अपने लिए और दूसरे लोगों की भलाई के लिए भी दुआएं करने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला शीघ्र इस महामाकी से सारे संसार को मुक्ति प्रादन करे। आमीन

(हाफिज़ सय्यद रसूल नयाज़)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

ख़िलाफ़त के निज़ाम की सुरक्षा, अनुपमीय आज्ञापालन।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो फ़रमाते हैं

"फिर यह बात भी याद रखना चाहिए कि शब्द "अत्ताअतो" के अर्थ केवल आज्ञापालन के नहीं बल्कि ऐसे आज्ञापालन के हैं जो हृदय की गहराई के साथ की जाए और इस में नफ़्स की मर्ज़ी और पसंदीदगी भी पाई जाती हो...."तौअ" के विपरीत "करहन" का शब्द बोला जाता है जिसके अर्थ हैं। مَا اَكْرَهْتَ نَفْسَكَ عَلَيْهِ (अल अक्रब) कि इन्सान कोई काम दिल से नहीं करना चाहता बल्कि बाहरी दबाव के कारण से उसे सरअंजाम देने पर विवश हो जाता है और यह साफ़ ज़ाहिर है कि ऐसे काम में प्रसन्नता पैदा न होगी

(तफ़सीर कबीर भाग 10 पृष्ठ 421)

यह एक आज़मूाया हुआ नुस्ख़ा है कि हमारी सारी उन्नतियों का आधार अहमदिया ख़िलाफ़त है। अत: हमारा कर्तव्य है कि समय की ख़लीफ़ा के उपदेशों को उस के हक के अनुसार आज्ञापालन करें। प्यारे आक़ा सय्यदना अमीरुल-मोमिनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने एक पैग़ाम में फरमाते हैं:

"आप में हर एक का कर्तव्य है कि दुआओं पर बहुत ज़ोर दे और अपने आपको ख़िलाफ़त से सम्बद्ध रखें और यह बात हमेशा याद रखें कि आप की समस्त उन्नितयों और कामयाबीयों का राज़ ख़िलाफ़त से जुड़ने में ही है। वही शख़्स सिल्सिला का लाभदायक वजूद बन सकता है जो अपने आपको इमाम से जोड़े रखता है। यदि कोई शख़्स इमाम के साथ अपने आपको जोड़े न रखे तो चाहे सारी दुनिया के ज्ञान जानता हो उस की कोई भी हैसियत नहीं। जब तक आपकी अक़्लें और चेष्टाऐं ख़िलाफ़त के अधीन रहेंगी और आप अपने इमाम के पीछे पीछे उस के इशारों पर चलते रहेंगे अल्लाह तआला की सहायता तथा मदद आपको प्राप्त रहेगी।

(दैनिक अलफ़ज़ल 30 मई 2003 ई पृष्ठ 2)

क़ुरआन-ए-करीम से हमें यह मालूम होता है कि "ख़िलाफ़त" एक महान नेअमत है और अल्लाह तआला की तरफ़ से एक ऐसा शर्त वाला इनाम है जो मोमिनों की जमाअत को नेक कर्मों के नतीजे में प्राप्त होता है और फिर उस इनाम के नतीजे में मोमिनों की जमाअत पर छाए हुए ख़ौफ़ के अंधेरों को नष्ट करते हुए शान्ति का सन्देश दिया जाता है, मोमिनों को नेक कर्मों की सनद दी जाती है, इस्लाम की सुदृढ़ता और धर्म की मज़बूती का वादा दिया जाता है और मोमिनों की जमाअत के इत्तिफ़ाक़ तथा एकता की ज़मानत दी जाती है

अत: जिस तरह हर क़ीमती और बेशक़ीमत चीज़ की सुरक्षा की जानी चाहिए इसी तरह ख़िलाफ़त जैसी बेमिसाल और अनमोल नेअमत की हिफ़ाज़त करना मोमिनो की जमाअत का बुनियादी

फ़र्ज़ क़रार पाता है बल्कि ख़िलाफ़त के स्थान तथा सम्मान को समक्ष रखते हुए निसन्देह यह कहा जा सकता है कि इस महान नेअमत की हिफ़ाज़त के लिए हर मोमिन को अपनी जान, माल, वक़्त और इज़्ज़त को क़ुर्बान करने के लिए हर क्षण तैयार रहना चाहिए और न केवल सारी ज़िन्दगी इस फ़र्ज़ की अदायगी में किसी प्रकार की कोताही नहीं करनी चाहिए बल्कि हर दृष्टिकोण से यह कोशिश भी करनी चाहिए कि अपनी नस्लों में भी इस ख़ुदा तआला के महान इनाम की क़दर क़ायम रखने के लिए उन्हें इस राह में क़ुर्बानी के उच्च स्तर पेश करने का सौभाग्य से आगाह किया जाए। ताकि यह महान नेअमत ख़ुदा तआला के वादा के अनुसार क़ियामत तक क़ायम रहे और हमारी नस्लें भी इस की बरकतों के वारिस क़रार पाकर और उस के दामन से जुड़ कर अपनी रुहानी तरक्की के सामान कर सकें। निज़ाम ख़िलाफ़त की हिफ़ाज़त और अपने ईमान में वृद्धि के लिए ज़रूरी है कि ख़लीफ़ा वक़्त की बेमिसाल इताअत का व्यावहारिक नमूना प्रस्तुत करते हुए, निरन्तर कोशिश करते रहें। अत: सच्ची ख़िलाफ़त की मज़बूती के लिए समय के ख़लीफ़ की ग़ैरमशरूत इताअत मोमिनों का प्रथम व्यकतिगत और सामूहिक फ़र्ज़ है। दुआ है कि अल्लाह तआला हमें हुज़ूर अनवर की सच्ची इताअत करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

हर रोज़ नुसरतों के निशाँ पर निशान हैं
बरकात हैं यह सिदक़ ख़िलाफ़त के नूर की

अताउल मुजीब लोन
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

ख़िलाफ़त ख़ामसा का बरकतों वाला युग और उसके फल

मुहम्मद यूसुफ़ अनवर

(क़ाइद तर्बीयत नौ-मुबाईन मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "ख़लीफ़ा के अर्थ उत्तराधिकारी के हैं जो धर्म का नवीनीकरण करे। नबियों के ज़माना के बाद जो अन्धेरा फैल जाता है उस को दूर करने के लिए जो उनकी जगह आते हैं उन्हें ख़लीफ़ा कहते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 383)

हमारा ख़िलाफ़त पे ईमान है
यह मिल्लत की तंज़ीम की जान है।

अंबिया के मिशन की पूर्णता ख़िलाफ़त से जुड़ी होती है :

जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं। ''

सो हे अज़ीज़ो! जब कि आदि काल से अल्लाह की सुन्नत यही है कि ख़ुदा तआला दो क़ुदरतें दिखलाता है ता विरोधियों की दो झूठी ख़ुशयों का सर्वनाश करके दिखलावे, सो अब सम्भव नहीं कि ख़ुदा तआला अपने चिरकालीन विधान को छोड़ देवे। इस लिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास बयान की दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएँ क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना आवश्यक है और उसका आना तुम्हारे लिए अच्छा है क्योंकि वह दायमी है जिसका निरन्तर क्रम प्रलय तक नहीं टूटेगा। और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ। किन्तु मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदैव तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का ब्राहीन-ए-अहमदिया में वादा है और वह वादा मेरी ज़ात के विषय में नहीं है अपितु तुम्हारे लिए वादा है।"(अलवसीयत पृष्ठ 7)

ख़िलाफ़त का वर्णन सूरह अन्नूर में आयत इस्तिख़लाफ़ में विस्तार से वर्णन किया गया है और साथ ही ख़िलाफ़त की बरकतें भी वर्णन हुई हैं

न हुस्ने मुद्दआ पर न शाने इर्तिक़ा पर
है बकाए इज़्ज़त इंसां ख़िलाफ़त की बका पर है

हज़रत मसीह मौऊद आ फ़रमाते हैं "मैं ख़ुदा की तरफ़ से एक क़ुदरत के रूप में प्रकट हुआ और मैं ख़ुदा की एक साक्षात क़ुदरत हूँ और मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत का द्योतक होंगे।

(अलवसीयत पृष्ठ 10)

ख़िलाफ़त क्या है ख़ुद नूरे ख़ुदा का जलवागर होना बशर का बज़म मौजूदात में ख़ैरुल बशर होना

जमाअत अहमदिया में ख़िलाफ़त की स्थापना

सूरह जुम्अ: में आया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक दूसरा प्रार्दुभव होगा उस के बाद फिर ख़िलाफ़त का दौर शुरू होगा अत: वादा के अनुसार इस युग में दूसरी बिअसत सानिया का आरम्भ हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादयानी अलैहिस्सलाम मसीह मौऊद के प्रार्दुभव से हुआ। आपके विसाल के बाद जमाअत अहमदिया में दूसरी क़ुदरत का आरम्भ हज़रत मौलाना मौलवी नूरुद्दीन साहिब रज़ी अल्लाह अन्नो ख़िलाफ़त पद पर 1908 ई में आसीन होने पर हुआ और अल्लाह के फ़ज़ल से आज क़ुदरत सानिया के पांचवें मज़हर सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला अन्हो जमाअत अहमदिया की क़ियादत फ़र्मा रहे हैं। प्रथम

ख़िलाफ़त से ही जमाअत अहमदिया का यह क़ाफ़ला जारी है और हर ख़िलाफ़त के दौर में जमाअत का क़दम आगे ही आगे बढ़ता चला गया और जमाअत अहमदिया दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक़्क़ी करती चली जा रही है। इस समय जमाअत अहमदिया 216 देशों में फैल चुकी है और उन देशों में जमाअत का पौधा लग चुका है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने इल्हाम में फ़रमाया है कि इन्नी मअका या मसरूर अर्थात हे मसरूर मैं तेरे साथ हूँ। यद्यपि यह इलहाम शाब्दिक रूप से आपकी ज़िन्दगी में बेशक पूरा हुआ और हर क्षण अल्लाह तआला की सहायता आप के साथ रही लेकिन जमाअत अहमदिया और सारी दुनिया ने इस इलहाम को शाब्दिक तौर पर भी उस वक़्त पूरा होते देखा जब अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेन्स्रेहिल अज़ीज़ को ख़िलाफ़त के पद पर आसीन फरमाया। अल्हम्दो लिल्लाह।

ख़िलाफ़त ख़ामसा का क़ियाम

22 अप्रैल 2003 ई को लंदन में अल्लाह तआला ने अपने वादा और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की भविष्यवाणियों के अनुसार हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को रुहानी मन्सब पर फ़ाइज़ फ़रमाया इस दृष्टि से ग़म की हालत ख़ुशी में बदल गई और जमाअत अहमदिया ने आप के हाथ पर बैअत की। अलहमदो लिल्लाह। ख़िलाफ़त पर आसीन होने के बाद अल्लाह तआला ने प्रत्येक क्षण रूहुल-क़ुदुस के साथ आपकी सहायता की और आप के बाबरकत दौर में जमाअत अहमदिया का क़दम दिन प्रतिदिन आगे ही आगे बढ़ता जा रहा है और इंशा अल्लाह बड़ी तेज़ी और तीव्रता के साथ यह रुहानी क़ाफ़ला तरक़्क़ी करता चला जाएगा।

यूं तो सिलसिला अहमदिया आरम्भ से ही तरक़्क़ी करते करते आगे बढ़ता रहा है लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद ज़माना के मुताबिक़ हर ख़िलाफ़त के दौर में ख़ुदा के मसीह की आवाज़ सारी दुनिया में फैल गई।

यद्यपि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे रहिमहुल्लाह तआला के बाबरकत ख़िलाफ़त के दौर में ही एम टी ए का प्रसारण शुरू हुआ थाा लेकिन वक़्त गुज़रने के साथ साथ इस में अधिक व्यापकता होती रही है और अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मौजूदा दौरे ख़िलाफ़त में 24 घंटे एमटी ए के प्रसारण आठ चैनलों के द्वारा सारे दुनिया में हो रहे हैं। और पूरी शान से इस के द्वारा दावत तथा तबलीग़ का काम हो रहा है।

यह सदाए फ़क़ीराना हक़-आश्ना फैलती जाएगी शश-जिहत में

इस वक़्त एम टी ए के प्रसारण उर्दू ,अरबी ,अंग्रेज़ी और अन्य कई भाषाओं में प्रसारित हो रहे हैं और दुनिया के कोने कोने में अब उसके माध्यम से जमाअत के तब्लीग़ी तथा तरबियती प्रोग्राम देखे ओर सुने जा रहे हैं। अलहमदु लिल्लाह और इस बात में शक नहीं है कि एम टी ए के द्वारा इमाम जमाअत अहमदिया अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की आवाज़ सुनकर हज़ारों नेक रूहें जमाअत अहमदिया में दाख़िल हो रही हैं।

ख़िलाफत के फलों में से एक यह भी है कि क़ुरआन मजीद में आया है वइज़स्सहुफो नुशिरत (तकवीर) अर्थात जब बहुत प्रचुरता से पुस्तकें

प्रकाशित की जाएंगी। अत: वर्तमान समय में प्रैस भी एक बहुत बड़ी ईजाद है और बहुत लाभदायक है जिससे प्रकाशन के मामले में पूरी दुनिया में ग़ैरमामूली सुविधाएं उपलब्ध हो गई हैं। ज़माना गुज़रने के साथ साथ अब टैक्नोलोजी में और अधिक वृद्धि होती जा रही है और प्रचार प्रासर के नवीन साइंसी माध्यम अपनी बुलंदियों को छू रहे हैं। इधर किताब छपी उधर वह इंटरंट के द्वारा सारी दुनिया में फैल गई इस बरकत वाले ख़िलाफ़त के ज़माना में अल्लाह के फ़ज़ल से लिट्रेचर के प्रकाशन का काम ग़ैरमामूली रफ़्तार पकड़ चुका है। करोड़ों की संख्या में पुस्तकें और लिट्रेचर और पमफ़्लेटस का प्रकाशन हो रही हैं। दुनिया के कई देशों में जमाअत अहमदिया के अपने प्रैस प्रकाशन का काम ज़ोरों से कर रहे हैं। जमाअत की वैबसाईटस के माध्यम से भी सभी फ़ायदा उठा रहे हैं। दुनिया की विभिन्न भाषाओं में बहुत अधिक संख्या में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें और क़ुरआन-ए-मजीद के अनुवाद सम्पूर्ण हो चुके हैं।

ख़िलाफ़त सहारा है हम ग़म-ज़दों का:

ख़िलाफ़त अहमदिया के बारे में हर घर और हर आदमी गवाही दे सकता है कि वह किस तरह दरबारे ख़िलाफ़त से उठने वाली दुआओं से हिस्सा पा रहा है। प्यारे आक़ा हर अहमदी के लिए मुजस्सम दुआ हैं। हुज़ूर अनवर से शरफ़-ए-मुलाक़ात पाने वाले समस्त लोग अपना अनुभव विभिन्न अंदाज़ में बयान करने की कोशिश करते हैं। ख़ुलासा कलाम यही निकलता है कि यह एक ऐसा लाभ पहुंचाने वाला चश्मा है जिसे मांद पड़ने का अंदेशा तक नहीं बल्कि यह बरसने वाले बादल की तरह हर ज़मीन पर खुल कर बरसता है। हुज़ूर अनवर के दौर-ए-फ्रांस की रिपोर्ट में एक मुलाक़ात करने वाले के तास्सुरात में लिखा है कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहलि अज़ीज़ को देखकर महसूस हुआ कि ख़ुदा का नुमाइंदा ज़मीन में घूम रहा है और हम अपनी ख़ुशी बयान नहीं कर सकते। बच्चों को प्यार मिला,दुआएं मिलीं और हमें दुनिया में क्या चाहिए। हुज़ूर अनवर का फ्रांस आना दरअसल अल्लाह तआला की तरफ़ से फ्रांस के लिए बहुत फ़ज़ल और बरकत का कारण है।"

(उद्धरित अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 3 दिसम्बर 2019 ई पृष्ठ 17)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ख़िलाफ़त के इनाम और जमाअत के लोगों की ज़िम्मेदारियों के हवाला से वर्णन करते हुए फ़रमाया कि :

"आप में हर एक का कर्तव्य है कि दुआओं पर बहुत ज़ोर दे और अपने आपको ख़िलाफ़त से सम्बद्ध रखें और यह बात हमेशा याद रखें कि आप की समस्त उन्नितयों और कामयाबीयों का राज़ ख़िलाफ़त से जुड़ने में ही है। वही शख़्स सिल्सिला का लाभदायक वजूद बन सकता है जो अपने आपको इमाम से जोड़े रखता है। यदि कोई शख़्स इमाम के साथ अपने आपको जोड़े न रखे तो चाहे सारी दुनिया के ज्ञान जानता हो उस की कोई भी हैसियत नहीं। जब तक आपकी अक़्लें और चेष्टाऐं ख़िलाफ़त के अधीन रहेंगी और आप अपने इमाम के पीछे पीछे उस के इशारों पर चलते रहेंगे अल्लाह तआला की सहायता तथा मदद आपको प्राप्त रहेगी।

(दैनिक अलफ़ज़ल 30 मई 2003 ई पृष्ठ 2)